GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

चित्तौड़गढ़ के कवि हेमरतन कृत 'गोरा बादल (पदमणी) चउपई' में राष्ट्रीय चेतना एवं वीरता का अध्ययन

रंजना शर्मा
शोधार्थी, हिन्दी विभाग
राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय अजमेर, राजस्थान
स्थायी पता - प्लाट न. 18 तिरुपति विहार नारायण मार्केट के पास, लिंक निवारू रोड़ गोविन्दपुरा झोटवाड़ा जयपुर (राज.) पिन कोड. 302044, मोबाईल न. 9928375286
Email ID – sharma.human@gmail.com

शोध सारांश

जैन कवि हेमरतन कृत 'गोरा बादल (पदमणी) चउपई' मध्यकालीन राजस्थानी साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण काव्यकृति है जिसमें राष्ट्रीय चेतना, वीरता, स्वाभिमान तथा मातृभूमि-प्रेम का अत्यंत प्रभावशाली चित्रण हुआ है इस काव्य के माध्यम से व्यक्त राष्ट्रीय भावना, नारी सम्मान, त्याग, स्वामिभक्ति तथा बलिदान की परम्परा का अध्ययन किया गया है । कवि हेमरतन ने इस काव्य में कल्पना की अपेक्षा ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर चित्तौड़ के वीर योद्धाओं गोरा-बादल तथा रानी पद्मिनी के अद्वितीय साहस और संघर्ष को चित्रित किया है इस काव्य में यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि मध्यकालीन भारतीय समाज में राष्ट्र केवल भूमि का नाम नहीं है, बल्कि उसकी संस्कृति, अस्मिता, गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक है। गोरा और बादल जैसे पात्रों ने अपने व्यक्तिगत सुखों का त्याग कर राष्ट्र, स्वामी और नारी सम्मान की रक्षा के लिए जीवन अर्पित कर देते हैं। कवि ने उनके शौर्य और बलिदान को इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि पाठकों के मन में राष्ट्रप्रेम और स्वाभिमान की भावना जागृत होती है। हेमरतन ने नारी को केवल सौंदर्य की वस्तु के रूप में नहीं, अपितु बुद्धिमान, स्वाभिमानी और प्रेरणादायी शक्ति के रूप में चित्रित किया है। रानी पद्मिनी का चरित्र साहस, नीति और आत्मसम्मान का प्रतीक बनकर उभरता है इसी प्रकार वीरांगनाओं द्वारा अपने पतियों को मातृभूमि की रक्षा के लिए युद्धभूमि में भेजना तत्कालीन समाज में राष्ट्रीय चेतना की गहरी भावना को दर्शाता है। काव्य में गोरा-बादल का संघर्ष केवल व्यक्तिगत निष्ठा का उदाहरण नहीं, यह राष्ट्र की रक्षा के लिए समर्पित आदर्श जीवन-मूल्यों का प्रतीक है इस प्रकार 'गोरा बादल (पदममणी) चउपई' राष्ट्रीय चेतना को

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

जागृत करने वाली एक प्रेरणादायी ऐतिहासिक कृति सिद्ध होती है जो आज भी भारतीय समाज को साहस, त्याग और स्वाभिमान की प्रेरणा प्रदान करती है।

संकेताक्षर - राष्ट्रीय चेतना, वीरता, मातृभूमि-प्रेम, स्वामिभक्ति, बलिदान, नारी सम्मान, राजपूती स्वाभिमान

प्रस्तावना- जैन कवि हेमरतन द्वारा रचित 'पदमिनी चउपई' राष्ट्रीय चेतना की महत्वपर्ण काव्य कृति है उनकी इस रचना का मुख्य उद्देश्य बिंदु चित्तौड़गढ़ के महान योद्धाओं का असाधारण शौर्य, स्वामिभक्ति और बलिदान को प्रस्तुत करना है इस कृति में कवि ने गौरव गाथा में कल्पनाओं का सहारा नहीं लेकर सच्ची घटनाओं पर आधारित ऐतिहासिक वृत्तान्त लिखा जो मातृभूमि प्रेम, नारी सम्मान और विदेशी आक्रमणकारियों के प्रतिरोध की एक सशक्त अभिव्यक्ति का माध्यम है। भारतीय साहित्य की परम्परा केवल मनोरंजन या भावाभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रही है, अपितु यह समाज, संस्कृति, राष्ट्रप्रेम और मानवीय मूल्यों की संरक्षक भी रही है विशेषकर मध्यकालीन साहित्य में ऐसे अनेक काव्य मिलते हैं जिनमें वीरता, स्वाभिमान, त्याग और मातृभूमि के प्रति समर्पण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। राजस्थान की वीरभूमि ने ऐसे असंख्य योद्धाओं को जन्म दिया जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर राष्ट्र, संस्कृति और नारी सम्मान की रक्षा की इन्हीं अमर वीरों की गौरवगाथा को साहित्यिक रूप प्रदान करने वाले कवियों में जैन कवि हेमरतन का महत्वपूर्ण स्थान है उनकी रचना 'गोरा बादल (पदमणी) चउपई' केवल एक ऐतिहासिक आख्यान नहीं, अपितु राष्ट्रीय चेतना, स्वाभिमान और बलिदान का जीवंत उदाहरण है। हेमरतन द्वारा रचित यह काव्य चित्तौड़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित है, जिसमें गोरा-बादल, रानी पद्मिनी और रतनसिंह जैसे पात्रों के माध्यम से वीरता एवं राष्ट्रभक्ति की भावना को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है इस काव्य में कवि ने कल्पना की अपेक्षा ऐतिहासिक घटनाओं को आधार बनाकर तत्कालीन समाज की मानसिकता, राजपूती आन-बान-शान तथा विदेशी आक्रमणों के विरुद्ध संघर्ष की भावना को अभिव्यक्त किया है यह रचना केवल युद्ध का वर्णन नहीं करती उस युग के मानवीय मूल्यों, नारी सम्मान, कर्तव्यनिष्ठा और त्याग की परम्परा को भी उजागर करती है।

'गोरा बादल (पदमणी) चउपई' में राष्ट्रीय चेतना का स्वर अत्यंत प्रबल रूप में उभरकर सामने आता है यहाँ राष्ट्र का अर्थ केवल भूमि नहीं, उसकी संस्कृति, अस्मिता और स्वाभिमान से है। गोरा और बादल जैसे वीर पात्र अपने व्यक्तिगत सुखों की चिंता किए बिना मातृभूमि और स्वामी की रक्षा को सर्वोपरि मानते हैं। संकट की घड़ी में उनका साहस, निष्ठा और बलिदान राष्ट्रप्रेम का आदर्श प्रस्तुत करता है यही कारण है कि इस काव्य के भीतर देशभक्ति और स्वाभिमान की भावना जागृत करने में सक्षम दिखाई देता है इस काव्य की एक

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

महत्वपूर्ण विशेषता यह भी है कि इसमें नारी को केवल सौंदर्य की वस्तु के रूप में प्रस्तुत नहीं किया गया, बल्कि उसे बुद्धिमान, साहसी और स्वाभिमानी रूप में चित्रित किया गया है। रानी पद्मिनी का चरित्र इस बात का प्रमाण है कि मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी केवल परिवार तक सीमित नहीं रही वह राष्ट्र और सम्मान की रक्षा के लिए भी दृढ़ संकल्पित रही है इसी प्रकार वीरांगनाओं का अपने पतियों को युद्धभूमि में भेजना त्याग और राष्ट्रप्रेम की महान् परम्परा को दर्शाता है। कवि हेमरतन ने अपने काव्य में युद्धनीति, शौर्य और बलिदान के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं को भी अत्यंत स्वाभाविक रूप में चित्रित किया है, गोरा-बादल की वीरता, स्वामीभक्ति तथा मातृभूमि के प्रति समर्पण आज भी भारतीय जनमानस को प्रेरित करता है।

शरणागत वत्सलता और वीरता के वैश्विक मूल्य का चित्रण

काव्य में गोरा बादल का बलिदान स्वामि-भक्ति और वीरता के उन मानदंडों को स्थापित करता है, जो दुनिया भर के वीरगाथाओं में पूजनीय है इस काव्य में बताया गया है कि अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण से चित्तौड़ के चारों ओर से घिर जाने पर दोनों वीर विपत्ति के समय अपने राजा का साथ नहीं छोड़ते है गोरा बादल मानते है कि क्षत्रिय वही होता है जो विपत्ति के समय अपने राजा (देश) के साथ रहे अक्सर देखा जाता है विपत्ति के समय मनुष्य की अपनी परछाई भी साथ छोड़ देती है पर ये दोनों मातृभूमि की रक्षा से बढ़कर कुछ भी नहीं समझते है।

"षीत्री ते जे षीत्रवट धरइ। अपजस थी मनमाहे डरइ।।
रुधे जातां न रहइ मांम। करइं अहोनिसि नृप नुं काँम।।"[1]

इससे यह बात सिद्ध होती है की मध्यकालीन साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का भाव रहा जहाँ वीरों ने मातृभूमि को अपने खून और स्वाभिमान से सिंचित किया है यहाँ वीरों की परीक्षा संकट के समय होती है जो मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व त्याग देते है ये सभी भाव राष्ट्रीय चेतना को उत्पन्न करते है, यहाँ की भूमि में पैदा होने वाले वीर राष्ट्र को ही सर्वप्रथम मानते है। अलाउद्दीन खिलजी राजा रतनसेन को धोखे से बंदी बना लेते है तब सभी सामंत चित्तौड़गढ़ की रक्षा के लिए रानी पद्मिनी को खिलजी के पास भेजने का निर्णय करते है जिस पर रानी पद्मिनी बहुत क्रोधित होती है पद्मिनी रतनसिंह को मुक्त कराने के लिए अपना दृढ़ संकल्प लेकर गोरा के पास सहायता के लिए जाती है। रानी गोरा से कहती है की लगता यहाँ के वीरों का अब तेज समाप्त हो गया है जो सामंत मुझे बादशाह के पास भेजना चाहते है इस पर गोरा ने कहा जब आप मेरे घर आ गई है, तो आप असुरों के घर नहीं जायेंगी वीरों के यह लक्षण नहीं हैं कि स्त्री को शत्रु को सौंपकर वे विजय प्राप्त करें।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

नारी शक्ति और बुद्धिमता

मध्यकालीन काव्यों में महिलाएँ अक्सर सौन्दर्य की वस्तु मानी जाती है परन्तु कवि हेमरतन ने पद्मिनी को एक कुशल रणनीतिकार माना है, जो राजा रतनसिंह के बंदी बनने पर भी विलाप करने के बजाये गोरा और बादल के साथ मिलकर मुक्ति की योजना बनाती है। रानी पद्मिनी और गोरा सामंतों के निर्णय से बादल को अवगत करवाती है तत्पश्चात् ऐसा वृतांत सुनकर बादल का खून खोल उठता है और कहता है स्त्री की सुरक्षा करना वीर अपना कर्तव्य समझते है बादल प्रतिज्ञा करता है अगर मेरा जन्म गाजन वीर्य से हुआ है, तो मैं निश्चित ही गजसेना का संहार कर दूँगा और बादशाह को पराजित कर राजा रतनसिंह को मुक्त करवाकर चित्तौड़गढ़ लेकर आऊंगा।

"बादिल बोलइ मतिउ पदमणी। मनि म करे उचाट।।
तू हु गाजन जनमी। जु भुंज गज-थाट।"[2]
"अरिदल गंजु एकलु। भंजु नृपनी भीड़।।
राम काजी हणमति किनूं। तिम तालूं तुझ पीड।।"[3]

गोरा-बादल और रानी पद्मिनी का आपसी वार्तलाप बादल की माता सुन लेती है इस पर बादल की माता पुत्र प्रेम के वशीभूत होकर अपने पुत्र से कहती है, हे पुत्र किले के भीतर बहुत से शूरवीर योद्धा मौजूद वे सभी बेशर्म होकर बैठे हैं और तुम बालक होकर भी क्यों अपने आप को लज्जित महसूस कर रहे हो, तत्पश्चात् बादल कहता हे, माँ आप मुझे बालक नहीं समझे मैं अपने पिता के समान वीर हूँ युद्ध में अपने शत्रुओं को पराजित कर दूँगा। बादल के ऐसे राष्ट्रवादी भाव ही मातृभूमि के प्रति युवाओं में राष्ट्रीय चेतना उत्पन्न करते है जिस आयु में युवा भौतिक सुख सुविधाओं और मनोरंजन में लगे रहते है उस आयु में बादल मनोरंजन के साधनों को छोड़कर नारी के स्वाभिमान और मातृभूमि के लिए अपना सब कुछ छोड़ने के लिए दृढ़ संकल्पित है।

"गाजन आज करूं गाजतु। रणस रंगि रमुं राजनु।।
सीह सिबद सुणि गय धड जाइ। कायर वचन कहइ मुषि कांइ।।"[4]

माँ ने बादल को खूब समझाने का प्रयत्न किया की वह युद्ध में भाग नहीं लेवें परन्तु वे अपनी बात पर अड़ीग रहते है तब बादल कि माँ ने अपनी पुत्रवधू से कहा की हे, पुत्री तुम प्रेम से बादल को समझावों हो सकता है वह मान जाए बादल की पत्नी ने प्रेम में बाँधने का खूब प्रयत्न किया परन्तु बादल अपनी पत्नी से कहते है, कि हे

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

प्रिय में अकेला ही शत्रु सेना को मारकर और उसका सारा खजाना भी अपने साथ लेकर आऊँगा तुम तभी समझना मेरी माता ने मेरा भार कैसे सहन किया होगा।

"लाष सतावीस लसकर लूटि। केवी सगला नांषु कूटि।।

माल घणु आणूं अरि मारि। तु मुझ माता झेलिउं भार।।"[5]

बादल पत्नी के प्रेम के मोहपाश में नहीं बंधे बल्कि पत्नी बादल के साहस और वीरता देखकर अपने पति से कहती है, हे स्वामी आप शत्रुओं को मारकर ही आना इससे आपका यश चारों दिशाओं में फैलेगा इस प्रकार कह सकते है कि जिस देश की विरागनाएँ अपने पति को मातृभूमि की रक्षा के लिए युद्धभूमि में भेजती हो यह राष्ट्रीय प्रेम नहीं है तो यह क्या है ?

कूटनीति और युद्ध कौशल

बादल अपनी पत्नी से विदा लेकर युद्ध भूमि की ओर प्रस्थान करते है जहाँ चित्तौड़ और अलाउद्दीन की सेना आपने-सामने होती है तब बादल वहाँ पहुँचकर चित्तौड़गढ़ की जोश विहीन सेना में जोश का संचार करते है बादल ने अपनी कुशल रणनीति से सभी को अवगत करवाया और पद्मिनी का झूठा प्रेम रूपी संदेश गढ़कर सर्परूपी अलाउदीन के पास उसकी रणनीति को जानने के लिए शिविर पहुँच जाता है।

"असिपति थु अहि सरिषु। साहि न सकतु कोइ।।

षीलिउ बादिल गारुड़ी। पदमिणि प्रेम परोइ।।"[6]

बादल अलाउद्दीन को विश्वास दिलाते है की मैं आप के पास रानी पद्मिनी को लेकर आउँगा इससे बादशाह प्रसन्न हो जाता है, परन्तु वह बादल की रणनीति को नहीं समझ पाता है, बादल इसका फायदा उठाकर दो हजार पालकियों को इस प्रकार सुज्जित करते है, कि शस्त्र और वीर इस प्रकार छिप जाएँ की अलाउद्दीन को इसका पता नहीं लगे इस पर रानी पद्मिनी बादशाह को संदेश भेजती है की वह रतनसिंह को छोड़ देवें इस पर बादशाह रतनसिंह को छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है।

बादल रतनसिंह को मुक्त कराने के लिए कारागार में जाते है तो रतनसिंह बादल को गलत समझ लेते है और गुस्से में आकर बादल से कहते है तुम पर धिक्कार है जो रानी पद्मिनी के बदले मुझे छुड़ाया तुमनें राजपूतों की कीर्ति व गौरव को धूल में मिला दिया।

"वइरी वयर घणु तइं कीउ। पदमिणि साटइ मुझ नइ लीउ।।

षीत्रवट माथइ घाली षेह। नीसत सुभट हुआ निसनेह।।"[7]

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

साधारण मनुष्य कैद से आजाद होते ही सबसे पहले शत्रु के शिविर से बाहर जाने की सोचता है, परन्तु रतनसिंह बादल पर क्रोधित हो जाते है और उन्हें राजपूती मान मर्यादा की चिंता अधिक होती है हेमरतन के काव्य अनुसार ये सभी भाव राष्ट्रीय चेतना के भाव को उजागर करते है जब रतनसिंह मुक्त हो जाने पर दुर्ग में पहुँचे है तब सभी वीर गोरा बादल के नेतृत्व में शत्रु सेना से वीरता के साथ युद्ध करने लग जाते है दोनों सेनाओं के बीच युद्ध इतना भयंकर हुआ की सुल्तान के पैर युद्ध से पलायन करने लगे, बादशाह युद्ध से भागने लगा तो बादल बादशाह को ललकारते हुए कहते है बादशाह युद्ध से मत भाग नहीं तो तेरी सारी झूठी कीर्ति नष्ट हो जायेगी।

“माहोमाहि मंडाणु किलु। बरवी बोलइ इम बादिलु।।
पातिसाह मत छंडइ पाउ। जू तूं अधिक अर्छइ रणराउ।। ”[8]

गोरा रावत और बादल ने स्वामी-धर्म के साथ क्षत्रीय धर्म की प्रतिष्ठा और मर्यादा की रक्षा के लिए युद्ध किया गोरा रावत ने युद्ध में वीरगति प्राप्त की उन्होंने सुलतान के अनगिनत सैनिकों को मार गिराया और युद्ध में विजय प्राप्त की इस पर रानी पद्मिनी ने बादल के साहस की प्रशंसा करते हुए कहा कि धन्य है, तुम्हारी माता जिसने तुम्हें अपनी कोख से जन्म दिया और पालन-पोषण किया, उस नारी को भी अनेकानेक धन्यवाद है, जिसका बादल पति है।

“धन्य धन्य तो माता सार। तूझ तणु जिणि झेलिउ भार।।
धन्य धन्य ते नारी सार। जेहनह बादिल छइ भरतार।। ”[9]

मातृभूमि की रक्षा करते-करते गोरा वीर गति को प्राप्त हो जाते है जहाँ साधारण नारी पति की मृत्यु पर शोक में डूब जाती है वहीं हेमरतन के साहित्य ‘गोरा बादल चौपई’ में बड़े ही असाधारण ढंग से दिखाया है, कि पति के वीरगति प्राप्त होने पर वीर नारी को अपने पति के शौर्य के अलावा कुछ दिखाई नहीं देता गोरा रावत की पत्नी अपने भतीजे बादल से पूछती है, कि बादल बताओ तुम्हारे काका ने शत्रुओं का संहार किस प्रकार किया, बादल ने बताया की गोरा काका ने युद्ध भूमि में शत्रुओं की सेना का इस प्रकार संहार किया मानों युद्ध भूमि में स्वम् भैंरुजी राक्षकों का संहार कर रहे हो।

बलिदान की गौरवशाली परम्परा में राष्ट्रवाद का संचार

इस काव्य का केंद्र बिंदु गोरा और बादल है जिन्होंने पीछे हटने के बजाये ‘केसरिया’ का मार्ग चुना यह राष्ट्रीय चेतना का उच्चतम स्तर जहाँ ‘राष्ट्र’ का सम्मान व्यक्तिगत जीवन से ऊपर है, कवि ने इस कृति के माध्यम से गोरा और बादल को केवल योद्धा ही नहीं माना इन्हें देश की अस्मिता का रक्षक भी माना है, बादशाह

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

अलाउद्दीन खिलजी की विशाल सेना ने जब राजा रतनसेन को छल से बंदी बना लिया तब ये व्यक्तिगत सुखों को त्यागकर शरीर पर शस्त्रों के प्रहार से छिद जाने पर भी अपने वंश के गौरव की रक्षा करते है।

"तिल तिल छेदी तनु आपणु। अमरपुरी पुहत प्रांहुणु।।

कुल अजुआलिउगोरइ आज। सुभटां तणी उवारी लाज।।"[10]

कवि हेमरतन के इस काव्य में वीरता, त्याग और स्वामिभक्ति का त्रिकोण है जो किसी भी राष्ट्र की मजबूती के लिए आवश्यक स्तम्भ है गोरा रावत का युद्ध में वीर गति पाना राष्ट्रीय चेतना की पराकाष्ठा है युवा बादल का युद्ध के लिए तत्पर होना और गोरा का अनुवभी सेनापति की भाँती लड़ना आने वाली पीढ़ीयों के लिए प्रेणाना पुंज बना इस प्रकार हेमरतन का काव्य विशेष रूप गोरा बादल के जीवन और संघर्ष पर आधारित भारतीय राष्ट्रीय चेतना को जगाने में अमूल्य योगदान देता है यह काव्य केवल एक ऐतिहासिक वृतांत नहीं, अपितु वीरता, स्वाभिमान और स्वतंत्रता के लिए अटूट संघर्ष का एक जीवंत प्रतीक है।

निष्कर्ष

जैन कवि हेमरतन की 'गोरा बादल (पदममणी) चउपई' केवल एक ऐतिहासिक वीरगाथा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक स्वाभिमान का सशक्त दस्तावेज है इस काव्य में गोरा-बादल, रानी पद्मिनी और रतनसिंह जैसे पात्रों के माध्यम से मातृभूमि-प्रेम, स्वामिभक्ति, त्याग, वीरता तथा नारी सम्मान जैसे उच्च मानवीय मूल्यों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया है। हेमरतन ने काव्य में यह स्थापित किया है कि किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसके नागरिकों के साहस, आत्मसम्मान और बलिदान की भावना में निहित होती है। गोरा और बादल का चरित्र राष्ट्ररक्षा के लिए समर्पित आदर्श वीरों का प्रतीक है जिन्होंने अपने प्राणों की आहुति देकर राजपूती आन-बान-शान और मातृभूमि की रक्षा की उनके जीवन से यह संदेश मिलता है कि राष्ट्रहित व्यक्तिगत सुखों और जीवन से भी अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। काव्य में नारी शक्ति का चित्रण भी अत्यंत उल्लेखनीय है, रानी पद्मिनी केवल सौंदर्य की प्रतिमा नहीं, बल्कि स्वाभिमान, धैर्य और दृढ़ संकल्प की प्रतीक के रूप में सामने आती हैं इससे यह सिद्ध होता है कि मध्यकालीन भारतीय समाज में नारी राष्ट्र और संस्कृति की रक्षा में समान रूप से सहभागी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचि :-

1. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ.184

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
May - June: 2026

2. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 195
3. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 195
4. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 203
5. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 212
6. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 231
7. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 247
8. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ 253
9. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 261
10. स. अक्षय कुमार देराश्री, गोरा बादल (पदमिणी) चउपई, प्रताप शोध प्रतिष्ठान, प्रकाशक उदयपुर, सं. 2020 पृ. 263